ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–७०
दिनांक– शुक्रवार, १० सितम्बर, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 33.2 एवं 26.7 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 87 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 67 प्रतिशत, हवा की औसत गति 8.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 3.6 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 6.5 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 29.9 एवं दोपहर में 38.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में वर्षा नही हुई है।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(11–15 सितम्बर, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 11–15 सितम्बर, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित की अवधि में आसमान में हल्के बादल छाये रह सकते है। कभी कभार मध्यम बादल छा सकते है। अगले १–२ दिनों तक मैदानी तथा तराई के जिलों में ज्यादातर स्थानों पर मौसम शुष्क रह सकता है। उसके बाद के दिनों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 34–37 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 24–27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पूरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन 10–15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- अगात बोयी गई धान की फसल में गंधी बग कीट की निगराणी करे। इसके शिशु एवं पौढ़ दोनों शुरुआत में कोमल पत्तियों एवं तनों का रस चुसकर पौधें को कमजोर बना देती है। बालियाँ निकलने तथा दुध भरने की अवस्था में यह दाने को चुसकर खोखला एवं हल्की बना देती है, जिससे उपज काफी प्रभावित होता है। इस समय यह पौधे को अधिक क्षति पहुचाती है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकि वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल १० प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर १०–१५ किलोग्राम की दर से भूरकाव ८ बजे सुबह से पहले अथवा ५ बजे शाम के बाद बालियों पर करें। किसान भाई खड़ी फसलों में दवा का छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें।
- स्वस्थ एवं सुडौल आकार वाली सब्जियों के उत्पादन के लिए किसान भाई ट्राइकोडरमा खाद से मृदा उपचार कर सब्जियों की रोपाई करें। मिर्च, बैगन, टमाटर की फसलों एवं नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है जिससे पौध के पत्ते टेढ़े–मेढ़े होकर सिकुड़कर रोगग्रस्त हो जाते है। यह बड़ी तेजी से एक–पौधें से दूसरे पौधे में फैलता है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- पिछात बोयी गई धान की फसल जो कल्ले बनने की अवस्था में हो, में ३० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। कहीं–कहीं अगात बोयी गई धान की फसल जो बाली निकलने की अवस्था में आ गई हो, में ३० किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें।
- धान की फसल में पत्ती का जीवाणु झुलसा रोग का नियंत्रण करें। इस रोग में पत्ती की चोटी की तरफ से किनारों या मध्य शिरा से होकर नीचे की तरफ धब्बा बढ़ता है। जिसका रंग पुआल जैसा हो जाता है। बाद में पुरा पौधा सुख जाता है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर बचाव हेतु स्ट्रेप्टोसाइक्लिन ५० ग्राम एवं कॉपर आक्सीक्लोराईड २.५ किलोग्राम दवा को ८०० लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से १२ दिनों के अन्तराल में दो छिड़काव करें।
- मूली एवं गाजर की अगेती बुआई करें। मूली के लिए पूसा चेतकी, पूसा देशी, पूसा हिमानी, जौनपुरी जापानी सफेद, पूसा रश्मि, जापानी सफेद, पंजाब सफेद, अर्का निशान्त आदि प्रभेद अनुशंसित है। गाजर के लिए पूसा केसर, पूसा मेघाली, पूसा यमदागिनी, अमेरिकन ब्युटी, कल्याणपुर येलो एवं नैन्टेस प्रभेद अनुशंसित है। बीजदर ४ से ५ कि०ग्रा० प्रति हेक्टेयर तथा २५X१० से०मी० की दूरी पर बुआई करें।
- फूलगोभी की पूसा अगहनी,पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक–१, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेधना, काशी कुवाँरी एवं अर्ली स्नोवॉल आदि किस्मों की रोपाई करे। अगात फुल गोभी में पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगराणी करे। पत्तागोभी की अगात किस्मों की बुआई नर्सरी में करें। इसके लिए प्राइड ऑफ इण्डिया, गोल्डेन एकर, पूसा मुक्ता, पुसा अगेती एवं अर्ली ड्रम हेड किस्में अनुशंसित है।
- बैगन की तैयार पौध की रोपाई करें। रोपनी से पहले १ ग्राम फ्युराडान ३ जी० दानेदार दवा प्रति पौधा की दर से जड़ के पास मिट्टी में मिला कर रोपनी करें। २०–२५ दिनों वाली फसल में निकौनी सिंचाई करें।
- मिर्च की फसल में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दे, तदुपरांत इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर घोल बनाकर छिड़काव करें।
- किसान भाई इस माह की १५ सितम्बर तक अरहर की बुआई उचॉस जमीन में संपन्न कर ले। इसके लिए पूसा–९ एवं शरद प्रभेद अनुशंसित है। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर २० किलोग्राम नेत्रजन, ४५ किलोग्राम स्फुर,२० किलोग्राम पोटाश तथा २० किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। बुआई के २४ घंटे पूर्व २.५ ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। जून–जुलाई में बोयी गई अरहर की फसल में कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।

आज का अधिकतम तापमानः 34.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.0 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 26.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.3 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी